विशिष्ट व्याख्यान (हिन्दी)

"सिनौली उत्खनन

भारतीय पुरातत्त्व की महत्वपूर्ण खोज"

14 अक्टूबर, 2021

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र

नई दिल्ली

भारतीय उपमहाद्वीप अपनी भौगोलिक एवं पर्यावरणीय विशेषताओं के कारण बहुआयामी संस्कृतियों का क्षेत्र रहा है। भारत में मानव संस्कृति के प्राचीनतम प्रमाण जो पाषाण उपकरण के रूप में मिलते है वह लगभग 3.5 लाख वर्ष (अतिरमपक्कम, तमिलनाडु) से भी अधिक पुराने है। तब से लेकर आज तक भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में कालानुसार अनेक संस्कृतयों की शुरुआत हुई एवं बाद में सभ्यता के रूप में विकसित हुई। सांस्कृतिक विशिष्टतनुसार इस सम्पूर्ण मानवीय कालक्रम को तीन भागों (प्रागैतिहासिक, आद्य–ऐतिहासिक व ऐतिहासिक काल) में विभाजित किया जाता है। **प्रागैतिहासिक काल** को पुनः तीन कालों में बाँटा गया है– पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल एवं नवपाषाण काल। इन तीनों कालों की संस्कृति के प्रमाण; पाषाण–अस्थि उपकरण, पशु–मानव जीवाश्म, शैलाश्रय एवं परवर्ती काल में यदा–कदा हस्तनिर्मित मृद्भाण्डों के टुकड़े आदि है साथ ही सबसे प्रमुख रूप में शैलचित्रों की प्राप्ति है जो लिपिरहित समाज व संस्कृति के तत्कालीन परिदृश्य को कलात्मक रूप से व्याख्यायित करता है। **आद्य इतिहास**– यह वह काल रहा जिसमें लिपि का विकास तो हुआ लेकिन उसे अभी तक पढ़ा नहीं गया जिसमें सिंधु सभ्यता प्रमुख है। यद्यपि सिंधु सभ्यता की खोज ने जहाँ विश्वपटल पर भारत को विश्व की प्राचीनतम विकसित सभ्यताओं की सूची में स्थान दिलाया तो वहीं लिपि के नहीं पढ़े जाने से विभिन्न विचारधारा के इतिहासकारों के मध्य अवशेषों के आधार पर लिखे गए इतिहास में विभिन्न मतों का प्रचलन भी हुआ। कभी आर्य–अनार्य संघर्ष तो कभी सिंधु या वैदिक सभ्यता। इन्हीं वैचारिक संघर्षों के बीच लगातार नई खोजों एवं साक्ष्यों के प्रकाश में आने के बाद इतिहास को नए रूप में व्याख्यायित किया जा रहा है जो सिंधु सभ्यता के वास्तविक पक्षों पर तटस्थता से प्रकाश डालेंगे।

इन प्रमुख खोजों में पद्मश्री डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा विलुप्त सरस्वती नदी की प्राचीन प्रवाहपथ एवं उसके आस–पास हड़प्पा सभ्यता के लगभग 300 पुरास्थलों की खोज है, जिसके आधार पर सिंधु सभ्यता के नाम की जगह सरस्वती–सिंधु सभ्यता का प्रयोग अधिक उपयुक्त माना जाता है। इसके साथ ही पद्मश्री बी0 बी0 लाल द्वारा उत्खनित कालीबंगा, आर० एस० बिष्ट द्वारा उत्खनित राखीगढ़ी (हिसार, हरियाणा), आर० एन० सिंह द्वारा उत्खनित आलमगीरपुर (मेरठ, उत्तर प्रदेश) आदि से प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर अनेक नए तथ्य प्रकाश

में आए हैं। इसी क्रम में सिनौली पुरास्थल की खोज, उत्खनन एवं प्राप्त अवशेषों के अध्ययन से भारतीय इतिहास के इस काल के अनेक अनसुलझे पहलुओं पर वास्तविक प्रकाश पड़ेगा।

ज्ञातव्य है कि वर्ष 2021 हम *'आजादी का अमृत महोत्सव'* के रूप में मना रहे हैं, वह आजादी जिसके स्वतंत्रता समर में आम–जनमानस को एकसूत्र में जिस भाषा ने बाँधा, वह थी मातृभाषा '**हिंदी**' क्योंकि यह 'जन' की भाषा है। इसकी प्रासंगिकता तब और अधिक हो जाती है जब भारत के गौरवमयी संस्कृति, सभ्यता, पुरावैभव से सम्बंधित अध्ययन, खोजों, पुरातात्त्विक उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों की जानकारी देश की अधिकांश जन–मानस तक पहुँचानी हो। इसीलिए वर्तमान परिदृश्य में केन्द्र व राज्य की विभिन्न सरकारों द्वारा शैक्षणिक अध्ययन आदि में मातृभाषा हिंदी की उपयोगिता को बढ़ाने का निरंतर प्रयास जारी है जिसके क्रम में राजभाषा इकाई द्वारा रेखांकित हिंदी भाषा व्याख्यान कार्यक्रम के संदर्भ में आदि दृश्य विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा इस व्याख्यान **''सनौली उत्खननः भारतीय पुरातत्त्व की एक महत्त्वपूर्ण खोज''** का आयोजन राष्ट्रभाषा हिन्दी में किया गया जिसकी प्रस्तुती डॉ0 संजय मंजुल जी (संयुक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, नई दिल्ली) द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो0 बी0 एल0 मल्ला (विभागाध्यक्ष, आदि दृश्य विभाग) द्वारा संपन्न किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण एवं समस्त गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं व्याख्यानकर्ता डॉ0 संजय मंजुल जी को अध्यक्ष महोदय द्वारा स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट कर अभिनन्दन किया गया।

गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन

अध्यक्ष महोदय द्वारा स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट

इसके पश्चात् डॉ0 संजय मंजुल जी द्वारा सनौली के पुरातात्त्विक महत्व पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया। आपने बताया कि यद्यपि गंगा–यमुना के उपरी मैदानी भाग में हड़प्पीय, उत्तर हड़प्पीय तथा ताम्र निधि/गैरिक मृद्भांड (ओ. सी.पी.) एंव धूसर चित्रित मृद्भांड के अनेक पुरास्थल प्रकाश में आ चुकें हैं। जिनमें कुछ स्थलों यथा आलमगीरपुर, हुलास, मदारपुर, मांडी, चंदायन का उत्खनन कार्य भी हुआ है, इन स्थलों से ताम्र/कांस्य युगीन संस्कृतियों की कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ तो मिली, परन्तु इनके उद्भव, क्रमिक विकास एवं सांस्कृतिक संबंधों के महत्त्वपूर्ण साक्ष्यों एवं पहलूओं की अत्यन्त सीमित जानकारी उपलब्ध रही। अतः इस क्षेत्र से प्राप्त पुरास्थलों का व्यापक स्तर पर उत्खनन एवं अध्ययन अत्यंत जरूरी था। इसी उद्देश्य से सनौली पुरास्थल (स्थानीय निवासी द्वारा खेत में खुदाई कराते समय आकस्मिक रूप से प्राप्त नरकंकालों के मिलने से इस स्थल की पहचान प्राचीन संस्कृति के रूप में हुई) का उत्खनन कार्य 2005–06 में प्रारम्भ हुआ।

सनौली पुरास्थल का हवाई छायांकन

यह पुरास्थल गाँव बड़ौत तहसील, बागपत, जिला उत्तर प्रदेश में स्थित है। दिल्ली से सनौली की दूरी लगभग 68 कि.मी. है। वर्तमान में पुरास्थल से यमुना नदी लगभग 7.5 कि.मी.

पश्चिम में प्रवाहित हो रही है। सनौली पुरातात्त्विक उत्खनन से प्राप्त शवाधान अप्रत्याशित रूप से अपने आप में अद्भुत हैं जिसने पारंपरिक पुरातात्त्विक अवधारणा, ऐतिहासिक एवं पौराणिक साहित्य मे वर्णित कथाओं, उल्लेखों व वैदिक साहित्य की पुनर्व्याख्या करने का आधार एवं विचार प्रदान किया, साथ ही क्षेत्रीय संस्कृति एवं हड़प्पीय संस्कृति के अतिरिक्त ताम्र–पाषाणिक संस्कृति अथवा ताम्र–कांस्य काल में गंगा–यमुना दोआब मे पल्लवित पुष्पित होने वाली संस्कृति की समझ को भी एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया।

उत्खनन से उपजे अनेक प्रश्न यथा शवाधान से प्राप्त मृद्भाण्ड व वस्तुओं की विभिन्न संस्कृति से संबंध, बसाहट की खोज? सांस्कृतिक सम्बंध? शवाधान से प्राप्त तलवार जोकि ताम्रनिधि संस्कृति से संबंध रखती है, उनका उत्तर हड़प्पीय संस्कृति से संबंध? इत्यादि ऐसे अनेक अनसुलझे प्रश्नों को समझने हेतु योजनाबद्ध उत्खन्न की आवश्यकता महसूस हो रही थी। फलतः वर्ष 2018 में इस पुरास्थल पर पुनः उत्खनन कार्य किया गया। परिणामस्वरूप आठ शवाधान के साक्ष्य प्राप्त हुए। जिनमें तीन शवाधानों में अन्य वस्तु के साथ खाटनुमा शवपेटिकाएँ थी तथा तीन शवाधानों से आंशिक मानव अस्थियाँ प्राप्त हुई जिनमें एक शवाधान में दो मानव हड्डियों को एक साथ रखा गया था तथा दो सांकेतिक शवाधान के भी साक्ष्य प्राप्त हुए, जिनमें मानव अस्थि नहीं थी। एक कुत्ते का शवाधान भी प्रकाश में आया। सीमित उत्खन्नित स्थल से बहुप्रथा युक्त शवाधानों की प्राप्ति अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

उत्खनन से प्राप्त शवाधान एवं मृण्डमय पुरावशेष

भारतीय पुरातत्व के इतिहास में पहली बार किसी उत्खनन से इस काल के रथों की प्राप्ति हुई। रथ की बनावट समकालीन संस्कृतियों तथा बाद के रथों से साम्य रखती है। रथ के दोनों पहिए पर ताँबे की तिकोने आकार की पच्चीकारी के कारण सम्पूर्ण ढांचे की पहचान कर उत्खनित किया जा सका। रथ के विभिन्न भागों में अर्धगोलाकार अथवा अंग्रेजी के डी आकार के लकड़ी के ढांचे तथा चार डंडे महत्त्वपूर्ण है जिन पर ताँबे का चादर चढ़ाया गया था। महत्त्वपूर्ण है पहियें की धूरी को जोड़नें के लिये भी ताँबे की बड़े कीलों के प्रयोग का साक्ष्य प्राप्त हुए है। असंबंध का भाग पूर्णतः विघटित हो गया है। इसके साथ ही दूसरा रथ भी रखा गया है और इसका दूसरे रथ का आकार प्रकार भी लगभग ऐसा ही है।

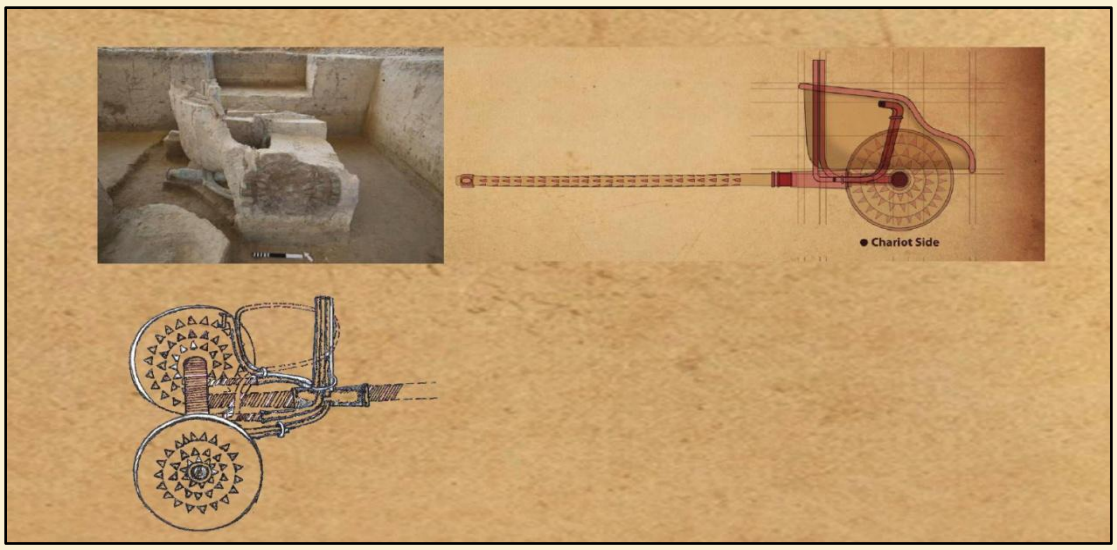

उत्खनन से प्राप्त रथ के अवशेष एवं उसका रेखाचित्र

सनौली के वर्तमान उत्खनन में सम्भवतः पहली बार बहुआयामी वैज्ञानिक विधि का प्रयोग उत्खनन के दौरान ही किया गया जैसे – एक्स रे, सी0 टी0 स्कैन, 3डी स्कैनिंग, ड्रोनलिडार मैपिंग, जी. पी. आर एवं मैगनोटोमीटर सर्वे, धातु विश्लेषण हेतु हैन्ड हैल्ड एक्स आर0 एफ0, मणकों के विश्लेषण हेतु लघु माइक्रोस्कोप आदि।

उत्खनन से प्राप्त धातु अवशेष एवं उसका सी0 टी0 स्कैन

व्याख्यान के पश्चात् सभा में उपस्थित विद्वतजनों, छात्रों आदि के लिए विषय सम्बन्धी प्रश्नोत्तर सत्र रहा जिनमें भारतीय इतिहास, कला–संस्कृति के सम्बन्ध में पुरातत्त्व के योगदान आदि के सन्दर्भ में प्रश्न पूंछे गए जिनका विषयानुरूप उत्तर व्याख्यानकर्ता द्वारा प्रदान किया गया।

प्रश्नोत्तर सत्र

अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो० मल्ला द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत किया गया जिसमें भारतीय इतिहास के विविध पक्षों जैसे पुरातत्त्व, कला–संस्कृति, भौगोलिक परिवेश आदि का अध्ययन भारतीय दृष्टि से करने पर जोर दिया जो प्रागैतिहासिक काल के लाखों वर्षों से लेकर इतिहास के वर्तमान चरणों तक दृष्टित होती है। अंततः अध्यक्ष महोदय जी ने व्याख्यानकर्ता को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में लगभग 100 से अधिक छात्र–छात्राओं, विद्वतजनों आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन सांयकालीन नाश्ते के साथ संपन्न हुआ।

प्रो० बी0 एल0 मल्ला अध्यक्षीय उद्बोधन

उपरोक्त व्याख्यान से स्पष्ट हुआ की सनौली के पुरातात्त्विक से प्राप्त सामग्री भारत ही नही बल्कि वैश्विक परिदृश्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है जो न केवल वैभवशाली अतीत की याद दिलाते हैं बल्कि उनमें इनकी महत्ता की अनुगूंज सुनाई देती है। जिससे निसंदेह यह कहा जा सकता है कि सृष्टि चाहे जिस रूप में प्रस्फुटित हुई हो लेकिन सभ्यता और संस्कृति का विकास मनुष्य ने अपने पुरूषार्थ से हासिल किया और साथ ही, यह भारतीय संस्कृति को आधार की निरंतरता का प्रमाण देता है। यह सफलता हमारे संस्कृतिक राष्ट्रगौरव की सफलता है जो निश्चित रूप से वर्तमान समय में भारत के गौरवशाली इतिहास में एक विशेष कड़ी के रूप में विश्व के पुरातत्त्व में सम्मिलित हुआ है।

डॉ० दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
नई दिल्ली